Loha Singh Ka Naya Marcha

लोहासिंह का नया मोर्चा

[प्रथम भाग]

Loha Sinha

रामेश्वर सिंह काश्यप

B Rama

Loha Singh Ka Naya Marcha
Loha Singhs New Front

राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल
मछुआ टोली, पटना-४

प्रकाशक
राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल
मछुआ टोली-पटना-४

J.P.

प्रथम संस्करण : १९६४

आवरणशिल्पी : कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव

सर्वाधिकार लेखक के अधीन।

मूल्य : तीन रुपये ~~मात्र~~ ५० पैसे

उन नव जवानों को समर्पित
जो
नेफा और लद्दाख के मोर्चे पर
देश के काम आये।

LOHA SINGH KA NAYA MORCHA : RAMESHWAR SINGH KASHYAP.

मुद्रक :
यतीन प्रेस
लंगर टोली, पटना-४

CHandan

इस संग्रह के किसी भी एकांकी का रंगमंचीय प्रदर्शन एवं सिनेमा में उपयोग लेखक की अनुमति के बिना वर्जित है ।

राष्ट्रीय सुरक्षा कोष के निमित्त धन संग्रह के लिए यदि इन एकांकियों का प्रदर्शन किया जाय तो रायल्टी देने की जरूरत नहीं है ।

पत्र व्यवहार निम्नलिखित पते पर करें :—

रामेश्वर सिह काश्यप
७, श्रीकृष्ण नगर
रोड नंबर—४, पटना-१

Chandan Thakur

Loha Singh's new front

Rameshwar Singh Kashyap

नाटक-सूची

Chandan Ahakw

Loha Singh's new front

Rameshwar Singh Kashyap

नाटक-सूची

रामेश्वर सिंह काश्यप की अन्य रचनायें

★ लोहासिंह [आँवले का मुरब्बा और अन्य छह करतूतें] मूल्य : ३·००

★ नीलकण्ठ निराला मूल्य : २·००

स्वर्गीय 'निराला' जी के व्यावहारिक जीवन से सम्बन्धित घटनाओं पर आधारित यह काव्य-रूपक हिन्दी साहित्य में एक प्रशंसनीय और सफल प्रयोग के रूप में है। इसकी सारी घटनाएं 'निराला' जी के कमरे में घटित होती है। सारे संवाद पात्रों के अनुकूल, छोटे एवं प्रभावशाली है। रूपक जिस दृश्यबन्ध पर प्रारम्भ होता है, उसी पर समाप्त भी होता है। बीच में पर्दा गिराने उठाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। बोधगम्य भाषा, सुगठित वाक्य, गहन अनुभूति और तीखे व्यंग्य के सुन्दर समन्वय के कारण प्रस्तुत काव्य-रूपक, श्रव्य एवं दृश्य दोनों दृष्टि से सर्वथा अनुपेक्षणीय है।

"आज" दैनिक, वाराणसी

★ निराला जी के जीवनकाल में ही रचित तथा बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना में अभिनीत

लोहासिंह
का
नया मोर्चा

J.P.

जहाँ भारत की जनता ने इसका हृदय से स्वागत किया एवं राष्ट्रीय संकट की वेला में बल और साहस प्राप्त किया; वहाँ पीकिंग रेडियो ने इस नाटक से घबरा कर पच्चीसों बार इसके विरुद्ध आवाज उठाई !

[प्रथम भाग]

[illegible]

[illegible]

मैकमेहन रेखा पर

(पृष्ठभूमि में बिगुल की आवाज। बैण्ड तथा मार्च करती हुई फौज की पगध्वनि। मशीनगन की गोलियों की आवाज। लोहासिंह अपने आँगन में घायल शेर की तरह घूम रहा है। उसके क्षोभ का कारण चीनी आक्रमण है।)

लोहासिंह : चाबस जवानो। मिजाज अप। दगाबाज़ चीनी सभके देस के सिवाना से लखेद घालो। चौकसी के साथ निसाना लो। बुलंदी का साथ सीमा के पहरा दो। अपना माता के इज्ज़त बचावने खातिर जानके बाजी लगा दो बहादुर जवान, जे चीनी हमरा देस के तरंकी में विघिन डालती है उसको टाट उलिट दो,

उसके नरेटी में कनस्तर बान्ह के उसको मूड़ी पर मोमबत्ती जरा दो। मारते बंदूक के उसको सन्दूक बना घालो। चाबस क्या बुलंदी का डिजैन है। हिमालै का बेलमुंड पर अपाना फतह का झंनबोट अपाना खून से लिख दो। दुश्मन के बाकस में पैकिन करके पेकिन का रिटरन टिकस काट दो।

खदेरन की माँ : (जलपान की तश्तरी हाथ में लिये आती है।) अजी सुनत नइखीं। आ मार बढ़नी रे। इनका आज काल्ह के जाने का हो गइबलऽबा। कपार पर जनुक खून असवार हो गइल हइन। चउबिस घंटा उर्दी-पेटी पेन्ह के कान्हा पर बनूक लेले अंगना में एगो लैन घींच के रहत बाड़न। चलीं कुछ खा पी लिहीं बहिए नइखन सुनत।

लोहासिंह : हाल्ट। हैंडस अप। हमारा मैकमोहन लैन का पाछा जाओ। तुम लुगा पेन्ह के हमारी के धोखा नहीं देने सकती है। हमारा ऊपर चीनी जादो नहीं चलेगी। (व्यंग्य) जब हमारी बंदूक गरजन करती है त तुम साड़ी पेन्ह के मोहब्बत देखावती है, आ जब हम तुम्हारा बिसवास करती है त तुम बिसवास घातिक करती हुई पाछा से अ वार करती है। अब हम चउकस होके मारक टैन करेगा। गेट से आउट होखो। आडर तर्मील। रैट एबौट टर्न। दुब दबा के सरक जाओ।

खदेरन की माँ : अजी हम न हईं। ईऽत अगिया बैताड़ लेखा हमरे पर बनूक तानत बाड़न।

लोहासिंह : आर्डर तमील। हमार मैक मोहन लैन से पाछा भागो नहीं त कनकसन बिगाड़ के हाई कलौटी का दुरघटकना करेगा।

खदेरन की माँ : हम खदेरन के माई न हईं। आपनो पराया नइखीं चीन्हत ?

लोहासिंह : साड़ी पेन्ह के हमारी के नैन का डिब्बा में धूर झोंकती है ? अब हम तुम्हारी बात के बिसवास नहीं करेगा। तुम मिंत्रताई करके सतुरताई किया। गिरगिट का माफिक रंग बदलती है ? अब तुम्हारी असलियत सं उसे दुनिया पर खुल गई। मुख में राम बगल में छूरी वाला बलंडरबोट ! अब तुम बौड़री नहीं बान्हने सकेगा। अब हमारा देश के बच्चा-बच्चा ताल ठोक के तैयार है। जानता नहीं है हम लोहासिंघ है, अंठावन रैफलल का रिटायर हवलदार। बोकला छोड़ा घालेगा। अइसा फैट मारेगी कि नाकबोल भुरकुस हो जाई। भागो हमारा मैकमोहन लाइन से, अपाना घरे जाओ। आर्डर तमील।

खदेरन की माँ : जहिया से चीनी सभसे झगरा भइल बा इनका के जाने का हो गइल। हे काली माई, बहरका चिनियन के काँचे चिबा घाल। हमनी के सुख चैन में हत्यारा सब आग लगवलै बाड़े स (रूंआसी) दू दिन इनका खइला पियला हो गइल। हमार त कुछ अकिले काम नइखे करत। करेजा भात लेखा सींझत रहता। लइका अलगे सहर में बा। गाँव के लोग किसिम किसिम के बात चलावत रहता (सिसकती है।)

लोहासिंह : मैकमेहन लैन पर बइठ के आँसू टपकावती है चिनिया बे दाम। चुटकी में मीस देगा।

खदेरन की माँ : रउआ अइसे का का दो बोलत बानी हमरा बड़ा डर लागत बा। ठीक से बतिआई। चलीं कुछ खा लीं। (सिसकती है)

लोहासिंह : लोहासिंघ मसिनगन के गोली के बरखा में बमबम करने सकता है, दुस्मन के तोप का गोला कंटोप बनाने सकता है बाकी रोदन सुन के हमारा मिजाज के डिस्टिक में गड़बड़फिकेसन होखने लागती है। रोदन के अटनसन बोलो। नरेटी का पिपिहिरी बन्न करो।

खदेरन की माँ : (सक्रोध) एह चिनियन के लुआठी से लुआठब, ऊ सब के मूड़ी पर खउलत अदहन उझिल देब। आ मार बढ़नी रे, ऊ सब के मारे मरद लोग मेहरारू के भुला गइलन। ना सुनब जी! घंटा भर से जल-खावा लेके खड़ा बानी, सलाम नइखन सुनत। जात बानी सब बीग देवे। (गिलास और तश्तरी पटक देती है।)

लोहासिंह : अरे खदेरन को मदर तुम है! असल में अबहीं हम अपाना नया मोरचा का फरंट पर गस्ती मारता था। हमारा बौडिस गाँव में तुम्हारा अंगना में था, बाकिर मिजाज हिमालय पहाड़ पर मैकमेहन लैन पर चक्कड़ काटती थी। तुम्हारा परजंट हमको बुझ-इबे नहीं किया। लड़ाई का टैन है मेमिन, बैटिल का मुकाम है। फुटबॉल का माफिक मुँह काहे

फुलावती है। तुमको त आउर हमारा हौसला बढ़ाना चाहीं।

खदेरन की माँ : त बिना खइले पियले काबुल को मोरचा लड़ब ?

लोहासिंह : काबुल का मोरचा नहीं खदेरन को माई अब लद्दाख का मोर्चा आउर नेफा का मोर्चा है। हमलोग मलेटरी का मैन है खदेरन को माई, देस का रच्छा खातिर राइफल का टैगर जांत के चैनमारी करने के लिये अंगुरी ककुलाती है। मिजाज चउबिस घंटा नेफा आउर लद्दाख के फरंट पर जाके दुस्मन के हुलिया टाइट करने खातिर मारक टैन करता है। मारे जोस के न हमको भूख पियास बुझाती है न अउंघी लागती है।

खदेरन की माँ : से का हम देखत नइखीं। बुझाता जइसे केहू सांढ के लाल लता देखा देले होखे। दिन-रात आन्हीं लेखा एह गाँव से ओह गाँव धावल फिरतबानीं आ घरहूँ आबत बानी त अँगना में किसिम किसम के नकसा बना के कान्हा पर बनूक ले ले कड़मस कड़मस पैंतरा बदलत रहत बानी।

लोहासिंह : भारतमाता न पुकारतो है खदेरन को माई। इस टैन पर जे जबान चैन आउर आराम खोजे उसको जीबन वृथा है। आपुस का सब डिफरेंसियल भुला के, सरबस तेयागन करने के घरी आ गई है।

खदेरन की माँ : अजी रउआ लड़ाई पर जाइब ? खदेरन के लड़ाई पर भेजब ? तऽत हमहूँ लड़ाई पर चलब। भारथ माई त हमरो माईये भइलीं।

लोहासिंह : चाबस। तुम्हारा मुँह से ई बानी सुन के करेजा अढ़ाई गज हो गई। भारथ खाली हमारा-तुम्हारा माई नहीं। फाटक जी को भी माई है, खांव साहेब के भी माई है, चौधरी, चटरजी, सिंघ, परसाद, रविदास, रजक, सबको माई है। उसको मुट्टक हिमालै है, गंगा जमुना उसको अंचरा है, कावेरी-कृष्णा उसको करधनी है, कन्या कुमारी उसको चरन है।

खदेरन की माँ : ई चिनियां कौनो राछस हवतन ! आ मार बढ़नी रे, बहरकन के मउअत आइल बा का जे हमनी के देस पर चढ़ाई करत बाड़ सन ?

लोहासिंह : ठीक बानी बोलता है मेमिन। सियार का मउअत आता है त सहर का डैरकसनमें मारच करता है चीन का आफत आया त हमारा देश से झगरा किया। हमलोग झगरा नहीं चाहता है किसी का मुलुक नहीं हड़पता है बाकि केहू हमारा सिवाना पर बढ़ेगा त उसको पलस्तर छोड़ा देगा। चीन एक देने हमलोग से पंचसील बतिआती थी दोसरा देने चढ़ाई के तैयारी करती थी। हम सब चीनी के चीनी माफिक घोर के सरबत लेखा पी घालेगा।

खदेरन की माँ : चीनी त सांचे बड़ा दगाबाज बाड़ेस। अँगुरी पकड़ के पहुँचा पकड़े के फेर में बाड़ सन। ई सब के हाथे पहुँसुल से कच्च कच्च काट घालित।

लोहासिंह : चीनी का बेरामी बहुत खराब होखती है। अइसन छुतिहर चीझ है कि मिजाज डैबिटिड हो जाता है।

इससे जेतना अलगे रही ओतने नीमन। एगो लफ-टंट के चीनी के बेरामी हो गइल त डाकधर उसको भात आउर आलू बन्न कर दिया आजब बहुत इन-जकसन घोपा तब जाके चीनी के कनकसन ठंढा हुआ।

खदेरन की माँ : हमारा त चीनी भेंटा जाइहसन त मार बढ़नी मार बढ़नी ऊ सब के बोखारे छोड़ा देब।

(दूर से बिगुल की आवाज़ सुनाई पड़ती है।)

खदेरन की माँ : आ गइलसन का, आ मार बढ़नी रे।

लोहासिंह ? (हँस कर) चीनी नहीं है मेमिन। अब उसको आगे बढ़ने को हिम्मत करने के पहिले पचास बार सोंचना परेगी। बुलाकी बिगुल बजा के सउंसे गाँव को बोलावती है। भगजोगनी मेहरारू लोग के बोला-वेगी, फाटक बाबा मरद लोग के कालिंग करेगी आ हम सब केहू के भाखन देगा—कि भाइयो पुलिस्टाप। आउर बहिनो पुलिस्टाप। फौज में भर्ती होखने सब केहू तैयारी के साथ आजे रिक्रूटिंग आफिस चलिये फुलिस्टाप। च.न के भारथ का सिवाना से लखेदिये फुलिस्टाप देस खातिर धन से, जन से, सोना से, मेहनत से, सेवा से तैयार रहिये फुलीस्टाप। तुम भी खेरदन को माई तैयार है। फुलिस्टौप ? सब केहू बूढ़ा, जवान, जनाना, जनानी रिक्रूटिंग आपिस चलेगा फुलिस्टौप।

खदेरन की माँ : जब रउए तैयार बानी त हम पाछा हटब ? तुरन्त मोटरी बान्हत बानी।

लोहासिंह : चाबस। मिजाज अप। फारवड मार्च। ले फराठी कूंच मार।

(लोहासिंह के पीछे पीछे खदेरन की माँ बाहर जाती है। पर्दा गिरता है।)

स्वर्ण दान

(लोहासिंह के आँगन में गाँव के बहुत से लोग जमा हैं। पाठक जी खदेरन की माँ और बुलाकी उन्हें बैठा रहे हैं।)

पाठक : (पुकार कर) अपने सभे, गाँव के मरद, मेहरारू, लइका सब केहू सा नत होके बइठीं जेबा से। लोहा जजमान तुरंते चीनी राछस से लड़े के उपाइ बतावे आवत बाड़न।

खदेरन की माँ : (पुकारकर) बइठ जाईं बहिनी सभे। ढेर चाऊं माऊं नत करीं। दरी बिछावल बा। (सहज स्वर) आमार बढनी रे, चाउं माउं के बढनी से बहारो। बुलाकी भैया, गाँव लइकन के सानत कर। हम उनका के बोला ले आईं।

बुलाकी : अरे लइका सभ। "बीडी में तमाकू चौवन लाई डाकू" मत हल्ला कर जा। सब केहू चुप। लोहासिंह आवते बाड़न।

[घर के भीतर से प्यालों के फूटने और लोहासिंह की आवाजें सुनाई देती हैं। लोहासिंह आता है।]

लोहासिंह : दुस्मन का जसूस। तुम्हारा मूड़ी पर हम सब चीनी पियाली फोर घालेगा। जइसे तुमको गोलाबारी करके कोट मारसल किया ओइसहीं दुस्मन का धुर-छुक छोड़ा के मैकमोहन लैन का उस पार लखेद देगा। भारथ का फतह के डंका का धमक से हिमालै का मिजाज बंपिलाट हो जाई।

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, देखत बानी फाटकजी, मरद भला अइसे खिसिआला ! ऊ घर में के सब चीनी के पियाली फोर घललन।

पाठक : केकरा पर गोलाबारी करत रह जजमान ! सउंसे गाँव के मरद मेहरारू के होस ठंढा हो गइल।

लोहासिंह : दुस्मन को जसूस था। उसको मूड़ी पर घर में जेतना चीनी का पियाली आउर पिलाट था सब फोर घाला।

खदेरन की माँ : दुस्मन के जसूस ? हमरा से काहे न कहलों ? मरती चार बढ़नी, ओहिजे पसर जइतन बहरकू।

बुलाकी : हम त एके लउर में दुस्मन राम के भंडारा खोल देतीं।

लोहासिंह : हम अपाना अगना में मैकमोहन लैन बना के पहरा देती आमने मने गाँव के पाबलिक के पुलिस्टौप बाला

भाखन के तैयारी करता था कि देखा जे एगो बिलार मैकमेहन लैन पर बइठ के हमारी सैड में कनकी से तिकवती है। हम हुकुम सदर बोल के उसको चैलेजर किया आ पूछा जे बिलाई भगत लड़ाई का टैन में तुम किसी खबर ले आया ? तऊ बोला.... माऊँ। एही बात पर हमारा मगज के थरमामेटर का टंपरेचर बमक गई। अरे बुरबक बिलार, दुस्मन का जसूस, हमारा दूध दही खाके तुम चाउं माउं का सनेस सुनावती है। बस उसको बेलमुंड पर चीनी का सब पिलाट आउर पियाली फोर के उसको हुलिया टैट करके कोठारी में बन्न कर दिया। एही से हमको आवने में अबेर हो गई। बाकि गाँव के पाबलिक के चेहरा पम्पचर काहे लउकती है। जोस का जगहा पर लोग कदुआ माफिक मुँह काहे लटका लिया ? ई सब भी दुस्मन के जसूस का फेर में पर गई है का ?

पाठक : जजमान, फिरंगी खबर फैला दे ले इ कि हमनी के दु ती न गो चउकी दुस्मन के हाथ में पर गइल जेबा से।

बुलाकी : हम कतनो कहलीं कि छव सात रोपेया के चउकी खातिर एतना उदास भइला के का जरूर बाकि लोग मनते नइखे।

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, चिनिया कंगाल हवसन का जे हमनी के चउकी ले गइलन से ऊ सब के सूते के चउकी नइखे जुरत ?

भाखन के तैयारी करता था कि देखा जे एगो बिलार मैकमेहन लैन पर बइठ के हमारी सैड में कनकी से तिकवती है। हम हुकुम सदर बोल के उसको चैलेंजर किया आ पूछा जे बिलाई भगत लड़ाई का टैन में तुम किसी खबर ले आया ? तऊ बोला.... माऊँ। एही बात पर हमारा मगज के थरमामेटर का टंपरेचर बमक गई। अरे बुरबक बिलार, दुस्मन का जसूस, हमारा दूध दही खाके तुम चाउं माउं का सनेस सुनावती है। बस उसको बेलमुंड पर चीनी का सब पिलाट आउर पियाली फोर के उसको हुलिया टैट करके कोठारी में बन्न कर दिया। एही से हमको आवने में अबेर हो गई। बाकि गाँव के पाबलिक के चेहरा पम्पचर काहे लउकती है। जोस का जगहा पर लोग कदुआ माफिक मुँह काहे लटका लिया ? ई सब भी दुस्मन के जसूस का फेर में पर गई है का ?

पाठक : जजमान, फिरंगी खबर फैला दे ले इ कि हमनी के दु ती न गो चउकी दुस्मन के हाथ में पर गइल जेबा से।

बुलाकी : हम कतनो कहलीं कि छव सात रोपेया के चउकी खातिर एतना उदास भइला के का जरूर बाकि लोग मनते नइखे।

खदेरन की माँ : आ मार बढनी रे, चिनिया कंगाल हवसन का जे हमनी के चउकी ले गइलन से ऊ सब के सूते के चउकी नइखे जुरत ?

पाठक : हमहूँ बहुत कहलीं कि जेबा से मैकमेहन रेखा के कलऊ में उहे महातम बा जे त्रेता में लछ्मन रेखा के रहे। जे चीनी राछ्स ओकरा के लांघी अचंभा गत : स्वाहा हो जाई। अब तू हीं समुझाव जजमान।

लोहासिंह : हम एक मिलिट में ई सबको गलत फैमली का सुलेसन सिटलमिंट करेगा। (जोर से) भाई लोग, बहिन लोग आउर रेजगारी माफिक लइका लोग, आप लोग के मिजाज का सिंगल डौन देख के हमारा दिल का डिस्टिक में तकलीफ होती है। हम फौजी आदमी है। हम जानता है कि मलेटरी कबो आगे बढ़ के आ कबो पाछे हट के अपना आखिरी आउर असली फतह खातिर कइसे पैंतरा बदलती है।

एह टैन जहाँ केहू गलत फैमली वाला आफवाह फैलावे फौरन से पेस्तर उसको नाक बोल भुरकुस करके हुलिया टैट कीजिये। दुस्मन का जसूस फुलिस्टौप अफवाह फुलिस्टौप। मिजाज अप। फिकिर नौट। हम गारंटी के साथ बोलता है कि हिनुस्तानी जवान से बढ़ के बहादुर हौल दुनिया में नहीं है। हमारा जीत जरूर होखी, हमारी विजय का झंडा हिमालै पर जरूर लहराई। मिजाज अप।

जिस माफिक सउँसे दुनिया का कारखाना मा मालिक रावन का रग तूरने खातिर राम के भेजा, कंस को कनकसन ठीक करने खातिर किसुन जी को भेजा उसी माफिक चौअन लाई का चल्हांकी का चटनी बनाने खातिर नेहरू जी चौहान जी के बहाली किया है। चीन अपना भकोल बढ़ावने का फेर में इतहांस भुला

गई। पाछिल गरेट बार में हिटलर भकोल बढ़ाया आउर अइसा सिलिप खाया कि जहन्नुम रसीद हो गई, मुसोलिनी भकोल बढ़ाया आउर तेलहंडा में पारसल हुआ ओ ही माफिक चाउंमाउं का चीनी पियाली फूट के रही आ ऊ हरदी चूना लगा के मैकमोहन लैन का उस पार फादर फादर चिचिआयेगी। इसलिए तबीयत बुलंद, मिजाज आप। बुलाकी बिगुल बजाओ, सब केहू भारथ माई का जै बोलो।

(भीड़ नारे लगाती है। बुलाकी बिगुल बजाता है।)

लोहासिंह : चाबस, अब अपाना नरेटी को अटनसन बोलिये। हमारा एगो सवाल का जवाब मारिये। एगो चउकी चला जाने पर त आप लोग अइसे मुंह लटका लिया जइसे इनार में बाल्टी लटकती है बाकि फरंट पर लड़नेवाला जे हमारा देश का करेजा का टुकड़ा बहादुर जवान है उसको खातिर आप का किया? इयाद रखिये, आज का लड़ाई खाली मलेटरी नहीं लड़ती है, समूचा देस लड़ता है। जब हम भाखारा नंगल आउर दामोदर घाटी का बान्ह बनाता था, चीन मशीनगन आउर तोप बनाता था। आज हमको हाइकलौटी का औजार खरीद के अपाना बहादुर जवान सभ के तागद पहुँचाने खातिर सोना चाहीं, रोपेया चाहीं, खून चाहीं, पसीना चाहीं आउर हिमालै अगर मांगे त उसपर चढ़ा देने खातिर मस्तक चाहीं।
इयाद कीजिये नेफा आउर लद्दाख के फरंट पर जूझने